

मृग तृष्णा है दुनिया दारी कब तक भागे गा प्राणी

मृग तृष्णा है दुनिया दारी कब तक भागे गा प्राणी
भीतर ही तेरे वो रब है कब तू जागे गा प्राणी

सुख में भी अब सुख नहीं मिलता सुविधा में आराम नहीं
मुख में राम का नाम है लेकिन मन में कही भी राम नहीं
लोग मोह को काम क्रोध को कब तू त्यागे गा प्राणी
मृग तृष्णा है दुनिया दारी कब तक भागे गा प्राणी

हर सपना साकार न होगा इतनी बात समज ले तू
ये उल्लज आसान न होगी
चाहे लाख उलज ले तू
बस वो ही तुझको ना मिले गा जो तू मांगे गा प्राणी
मृग तृष्णा है दुनिया दारी कब तक भागे गा प्राणी

दुनिया पर इतरा न साहिल अखिर गावह लगाये गी
मरहम जब तू चाहे गा तब नामक भाव बताये गी
दिल को तेरे जगत हमेशा यु ही धागे का प्राणी
मृग तृष्णा है दुनिया दारी कब तक भागे गा प्राणी

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/16900/title/mrig-trishana-hai-duniya-daari-kab-tak-bhaage-ga-praani>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |